International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 7 Issue – 1 January-June 2019
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

दक्षिणी अरावली पहाड़ी प्रदेश में मानव पारिस्थितिकी

डॉ. रामा प्रसाद[1] और मनमोहन सिंह[2],

शोध सारांश

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व दोनों परस्पर सम्बन्धित है लेकिन भिन्न सकंल्पनाऐं है। जनसंख्या वितरण एवं घनत्व अध्ययन की पृष्ठभूमि से पता चलता है कि जनसंख्या भूगोल के एक स्वतंत्र शाखा के रूप में विकसित होने से पूर्व ही जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का आपसी सम्बंध किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या की जानकारी प्राप्त करने के लिए जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का विश्लेषण मुख्य आधार होता है। जनसंख्या वितरण प्रारूप न केवल मनुष्य के किसी क्षेत्र विशेष में बसाव सम्बधिंत अभिरूचि एवं विरूचि का द्योतक है। अपितु क्षेत्र में कार्यरत भौगोलिक कारकों के संश्लेषण का स्पष्ट प्रदर्शक भी होता है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य दक्षिणी अरावली पहाड़ी प्रदेश की मानव पारिस्थितिकी का विश्लेषण करना है। प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है जिसमें आरेखन एवं आलेखन विधि उपयोग में ली गई है।

मानव सभ्यता के विकास एवं उसमें आई जटिलताओं के साथ–साथ न तो जनसंख्या वितरण प्रारूप ही सरलता से मिलता है और न ही इसके वितरण का स्पष्टीकरण क्योकि वर्तमान समय में जनसंख्या वितरण बहुत अधिक क्षेत्रीय विस्तार लिये हुये है और साथ ही राजनैतिक एवं प्रशासनिक ईकाईयाँ भी बढ गई है। अब जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का अध्ययन एक जटिल प्रक्रिया जरूर है, लेकिन जनसंख्या भूगोलवेत्ताओं ने जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का सफलतापूर्वक विश्लेषण किया है।

संकेतांक : *जनसंख्या भूगोल, अभिरूचि , विरूचि, भौगोलिक कारक, संश्लेषण, मानव पारिस्थितिकी, सभ्यता, राजनैतिक, प्रशासनिक।*

परिचय :

पर्वतीय पारिस्थितिकी के इस क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि और जनसंख्या का वितरण भौतिक कारकों से प्रभावित रहा है। दक्षिणी अरावली प्रदेश राजस्थान के दक्षिणी छोर में स्थित क्षेत्र है, जिसकी सीमा गुजरात राज्य से लगती है। यहां की अधिकांश जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है, तथा जीवन–यापन के लिए प्रधानतः कृषि कार्य एवं पशुपालन पर निर्भर हैं। यहां की जनसंख्या के प्रारूप का अध्ययन क्षेत्र की उन्नति एवं तकनीकी विकास को उचित आधार प्रदान करता है। किसी क्षेत्र विशेष में जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व क्षेत्र में उपलब्ध आर्थिक क्रियाकलापों पर आधारित होता हैं। राजस्थान राज्य के दक्षिणी अरावली क्षेत्र में आर्थिक क्रियाकलाप मिले–जुले स्तर पर हैं। अतः यहां जनसंख्या घनत्व भी उसी स्तर पर उपलब्ध हैं।

राजस्थान राज्य में दक्षिणी अरावली क्षेत्र में प्रदेश के 9 जिले सम्मिलित किये गये हैं। वर्ष 2011 के आंकड़ों के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में राज्य की कुल जनसख्या का 13.17 प्रतिशत भाग निवास करता है। अध्ययन क्षेत्र की कुल कार्यशील जनसंख्या का 70.76 कृषि कार्यों (क्रियाओं) में संलग्न हे। सारांश रूप में कृषि व्यवसाय ही अध्ययन की प्रमुख आर्थिक क्रिया है। अध्ययन क्षेत्र में प्रारम्भिक जनसंख्या वृद्धि भौतिक कारकों से प्रभावित रही है।

जनसंख्या वितरण

जनसंख्या वितरण किसी क्षेत्र कि जनांकिकीय विशेषताओं के अध्ययन का आधार होता है, जनसंख्या का वितरण क्षेत्रीय प्रारूप की और इशारा करता है जनसंख्या वितरण से आशय विभिन्न क्षेत्रों में लोग कितनी संख्या में निवास करते है, से है। दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में जनसंख्या का वितरण असमान है यहाँ कही पर बहुत अधिक जनसंख्या निवास करती है तथा कही पर बहुत कम जनसंख्या निवास करती है। अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या संरचना को सारणी में दर्शाया गया है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या 14167179 थी जो वर्ष 2011 में बढ़कर 16266564 हो गई।

दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या 14167179 थी जिसमें 7177338 पुरूष तथा 6989841 महिलायें थी। वहीं वर्ष 2011 की जनगणना में यहाँ जनसंख्या बढ़कर 16266564 व्यक्ति हो गई जिसमें 8252620 पुरूष तथा 8013944

महिलायें थी। दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 14.82 प्रतिशत रही है जो कहीं ना कहीं राज्य स्तर से भी कम ही है।

जालौर जिले में वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या 1448940 व्यक्ति थे जिनमें 737880 पुरूष तथा 711060 महिलायें थी। वर्ष 2011 में यहाँ की जनसंख्या बढ़कर 1828730 ही रह गई जिनमें पुरूषों की संख्या 936634 तथा महिलाओं की संख्या 892096 हो गई है।

सारणी संख्या – 1 : दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र : जनसंख्या वितरण – 2001–2011

प्रदेश	जनसंख्या वितरण				
	वर्ष 2001	प्रतिशत में	वर्ष 2011	प्रतिशत में	वृद्धि दर
जालौर	1,448,940	10.23	1828730	11.24	26.21
सिरोही	851,107	6.01	1036346	6.37	21.76
पाली	1,820,251	12.85	2037573	12.53	11.94
भीलवाड़ा	2,013,789	14.21	2408523	14.81	19.60
राजसमन्द	987,024	6.97	1156597	7.11	17.18
डूंगरपुर	1,107,643	7.82	1388552	8.54	25.36
बांसवाड़ा	1,501,589	10.60	1797485	11.05	19.71
चित्तौड़गढ़	1,803,524	12.73	1544338	9.49	-14.37
उदयपुर	2,633,312	18.59	3068420	18.86	16.52
दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र	*14167179*	*100.00*	*16266564*	*100.00*	*14.82*

स्रोत : जिला जनगणना प्रतिवदेन, 2001 एवं 2011

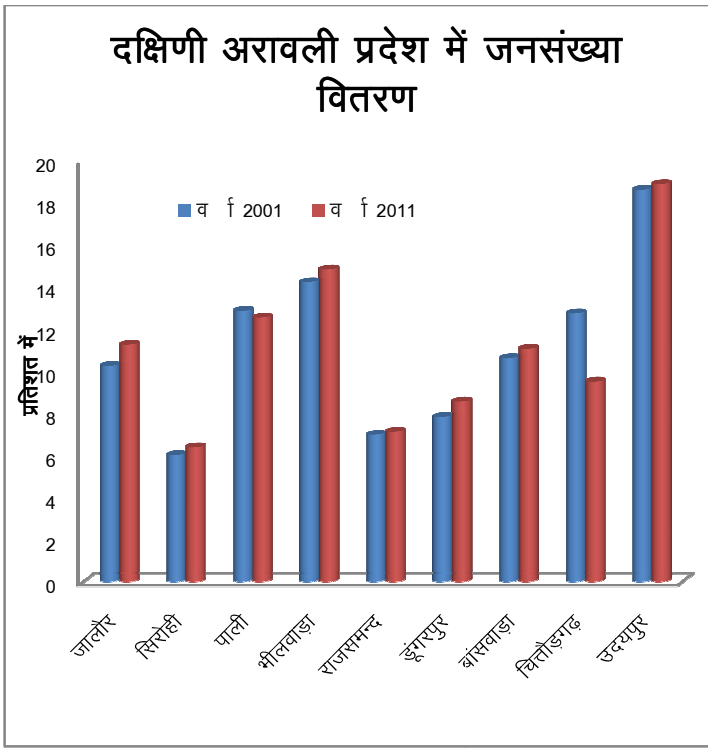

आरेख 1 : दक्षिणी अरावली प्रदेश में जनसंख्या वितरण

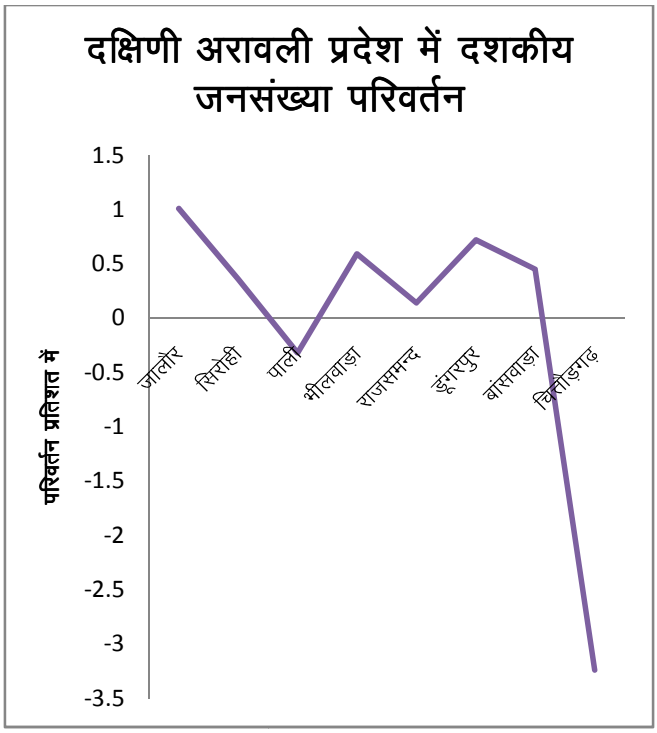

आरेख 2 : दक्षिणी अरावली प्रदेश में दशकीय जनसंख्या परिवर्तन

वर्ष 2001 में सिरोही जिले में कुल जनसंख्या की 6.01 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती थी जो कि वर्ष 2011 में बढ़कर 21. 76 प्रतिशत हो गई अर्थात् इस क्षेत्र में जनांकिकी का दशकीय परिवर्तन सकारात्मक रहा है। यह क्षेत्र वर्ष 2001 में अध्ययन क्षेत्र का सर्वाधिक कम जनसंख्या वाला क्षेत्र था जो कि वर्ष 2011 में आगे हो गया।

पाली जिले की जनसंख्या वर्ष 2001 के अनुसार 1820251 व्यक्ति थे जिनमें 918856 पुरूष तथा 901395 महिलायें थी। वहीं वर्ष 2011 की जनगणना में यहाँ की कुल जनसंख्या बढ़कर 2037573 हो गई जिसमें 1025422 पुरूष तथा 1012151 महिलायें थी। इस क्षेत्र की दशकीय वृद्धि दर 11.94 प्रतिशत रही है। पाली जिले में अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या का 12.85 प्रतिशत जनसंख्या वर्ष 2001 में निवास करती थी। वहीं वर्ष 2011 में यहाँ 11.94 प्रतिशत जनसंख्या ही निवास करती है।

चित्तौड़गढ़ जिला अध्ययन क्षेत्र का विरल जनसंख्या वाला क्षेत्र है। यहाँ वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या 1803524 थी जिसमें 918063 पुरूष तथा 885461 महिलायें थी। यहाँ अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या की 12.73 प्रतिशत जनसंख्या ही निवास करती थी। दूसरी ओर वर्ष 2011 की जनगणना में जिले की कुल जनसंख्या में प्रतापगढ़ जिला अलग बन जाने के कारण गिरावट फलस्वरूप 1544338 व्यक्ति थे जिनमें 783171 पुरूष तथा 761167 महिलायें थी। वर्ष 2011 में इस क्षेत्र में अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या का 9.49 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती थी। साथ ही इस क्षेत्र में जनांकिकी का दशकीय परिवर्तन नकारात्मक रहा है तथा जनसंख्या वृद्धि दर भी नकारात्मक (–14.37 प्रतिशत) ही रही है।

सारणी सं.– 2 : दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र : जनसंख्या परिवर्तन (प्रतिशत में)

प्रदेश	जनसंख्या परिवर्तन		
	वर्ष 2001	वर्ष 2011	परिवर्तन
जालौर	10.23	11.24	1.01
सिरोही	6.01	6.37	0.36
पाली	12.85	12.53	-0.32
भीलवाड़ा	14.21	14.81	0.59
राजसमन्द	6.97	7.11	0.14
डूंगरपुर	7.82	8.54	0.72
बांसवाड़ा	10.60	11.05	0.45
चित्तौड़गढ़	12.73	9.49	-3.24
उदयपुर	18.59	18.86	0.28
दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र	100	100	0

स्रोत : जिला जनगणना प्रतिवदेन, 2001 एवं 2011

राजसमन्द जिला अध्ययन क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण भौगोलिक विभाजन है, जहाँ वर्ष 2001 में जनसंख्या का वितरण अल्प ही पाया जाता था, परन्तु वर्ष 2011 की जनगणना में यहाँ जनसंख्या का बाहुल्य देखने को मिला है। वर्ष 2001 में इस क्षेत्र में कुल जनसंख्या 987024 व्यक्ति थे जिनमें 493459 वर्ष तथा 493565 महिलायें थी। यह अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या का 6.97 प्रतिशत ही था। एक दशक के अन्तराल के उपरान्त इस क्षेत्र की जनसंख्या बढ़कर 1156597 व्यक्ति हो गई जिसमें 581339 पुरूष तथा 575258 महिलायें हो गई। वर्ष 2011 की जनगणना में अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या का 7.11 प्रतिशत भाग इस क्षेत्र में निवास करने लगा है। इस क्षेत्र की दशकीय वृद्धि दर भी 17.18 प्रतिशत रही है।

भीलवाड़ा जिले की जनसंख्या वर्ष 2001 के अनुसार 2013789 व्यक्ति थे जिनमें 1026650 पुरूष तथा 987139 महिलायें थी। वहीं वर्ष 2011 की जनगणना में यहाँ की कुल जनसंख्या बढ़कर 2408523 हो गई जिसमें 1220736 पुरूष तथा 1187787

महिलायें थी। इस क्षेत्र की दशकीय वृद्धि दर 19.60 प्रतिशत रही है। वर्ष 2001 में यहाँ अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या की 14.21 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती थी जो कि वर्ष 2011 में आमूलचूल बढ़कर 14.81 प्रतिशत हो गई।

डूंगरपुर जिले की जनसंख्या वर्ष 2001 के अनुसार 1107643 व्यक्ति थे जिनमें 547791 पुरूष तथा 559852 महिलायें थी। वहीं वर्ष 2011 की जनगणना में यहाँ की कुल जनसंख्या बढ़कर 1388552 हो गई जिसमें 696532 पुरूष तथा 692020 महिलायें थी। इस क्षेत्र की दशकीय वृद्धि दर 25.36 प्रतिशत रही है। वर्ष 2001 में यहाँ अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या की 7.82 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती थी जो कि वर्ष 2011 में सर्वाधिक बढ़कर 25.36 प्रतिशत हो गई।

बांसवाड़ा जिले की जनसंख्या वर्ष 2001 के अनुसार 1501589 व्यक्ति थे जिनमें 760686 पुरूष तथा 740903 महिलायें थी। वहीं वर्ष 2011 की जनगणना में यहाँ की कुल जनसंख्या बढ़कर 1797485 हो गई जिसमें 907754 पुरूष तथा 889731 महिलायें थी। इस क्षेत्र की दशकीय वृद्धि दर 19.71 प्रतिशत रही है। वर्ष 2001 में यहाँ अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या की 10.60 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती थी जो कि वर्ष 2011 में बढ़कर 11.05 प्रतिशत हो गई।

उदयपुर जिला अध्ययन क्षेत्र का सघन जनसंख्या वाला क्षेत्र है। यहाँ वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या 2633312 थी जिसमें 1336004 पुरूष तथा 1297308 महिलायें थी। यहाँ अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या की 18.59 प्रतिशत जनसंख्या ही निवास करती थी। दूसरी ओर वर्ष 2011 की जनगणना में इस पहाड़ी क्षेत्र की कुल जनसंख्या 3068420 व्यक्ति थे जिनमें 1566801 पुरूष तथा 1501619 महिलायें थी। वर्ष 2011 में इस क्षेत्र में अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या का 16.52 प्रतिशत जनसंख्या ही निवास करती थी।

जनसंख्या घनत्व

जनसंख्या वितरण का पूर्णतः विश्लेषण जनसंख्या घनत्व के माध्यम से किया जाता है। जनसंख्या घनत्व से तात्पर्य प्रति इकाई में रहने वाले लोगों की संख्या से है। प्रतिवर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर निवास करने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते है संतुलित जनसंख्या घनत्व किसी प्रदेश की उन्नति और भावी विकास का अनुमान लगाने में मुख्य आधार होता हैं। जनसंख्या घनत्व कई कारणों का परिणाम हैं जिसमें प्राकृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और कृषि आदि कारकों को गिनाया जा सकता हैं अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक असमानता के कारण यहाँ जनसंख्या घनत्व में विभिन्नता पाई जाती है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व 184 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था जिसमें विगत 10 वर्षो में 27 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है, इसमें भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्ष 2011 की जनसंख्या के अनुसार अध्ययन क्षेत्र का कुल जनसंख्या घनत्व 211 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है।

सारणी संख्या – 3 : दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व वितरण वर्ष 2001 एवं 2011

भौगोलिक क्षेत्र	जनसंख्या घनत्व वर्ष 2001	जनसंख्या घनत्व वर्ष 2011	परिवर्तन
जालौर	136	172	36
सिरोही	166	202	36
पाली	147	164	17
भीलवाड़ा	193	230	37
राजसमन्द	207	243	36
डूंगरपुर	294	368	74
बांसवाड़ा	298	357	59

चित्तौड़गढ़	166	142	.24
उदयपुर	190	221	31
दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र	*184*	*211*	*27*

स्त्रोत : जिला सांख्यिकी कार्यालय 2001

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में वर्ष 2001 में सर्वाधिक जनसंख्या दबाव वाला क्षेत्र बांसवाड़ा जिला है, जहाँ वर्ष 2011 में 357 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। वर्ष 2001 में सबसे कम जनघनत्व जालौर जिले का (136 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर) रहा है। वहीं वर्ष 2011 में सर्वाधिक बांसवाड़ा जिले में (357 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर) तथा सबसे न्यून चित्तौड़गढ़ जिले में (142 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर) अंकित किया गया है।

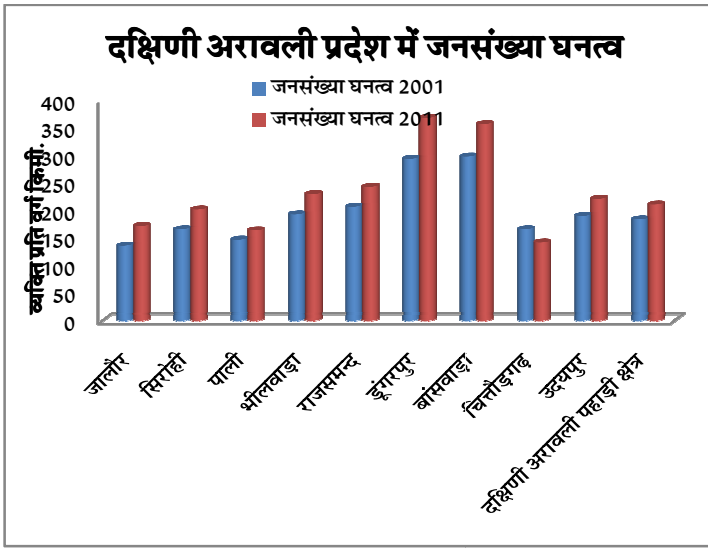

आरेख 3 : दक्षिणी अरावली प्रदेश में जनसंख्या घनत्व

इस प्रकार क्षेत्र में पिछले दशकों से लगातार जनसंख्या घनत्व में वृद्धि अंकित की जा रही है। इसका कारण यह है कि यहाँ आधारभूत सुविधाओं की स्थिति अच्छी होने के कारण बाहरी जनसंख्या का प्रवास हुआ है। रोजगार की सम्भावनाएं बनी है तथा चिकित्सा व्यवस्था में सुधार हुआ है जिसके कारण जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।

जनसंख्या वृद्धि दर

एक निश्चित समयावधि में किसी निश्चित भू–भाग की जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि के रूप में परिभाषित किया जाता है। जनसंख्या वृद्धि निश्चित भू–भाग पर दो समय अन्तरालों के बीच जनसंख्या में होने वाला परिवर्तन है। किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि उस क्षेत्र की आर्थिक प्रगति सामाजिक मान्यताओं, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि का प्रतिफल होती है। दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि के अन्तर्गत वर्ष 2001 से वर्ष 2011 तक के एक दशक का अध्ययन किया गया है। वर्ष 2001 मे अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या 14167179 थी जो वर्ष 2011 मे बढकर 16266524 हो गई अर्थात एक दशक मे अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या मे 14.82 प्रतिशत की वृद्वि रही। इस दशक में अध्ययन क्षेत्र के कुछ भागों में जनसंख्या वृद्धि दर नकारात्मक रही है।

सारणी सं. 4 : दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र : जनसंख्या वृद्धि दर

प्रदेश	जनसंख्या वृद्धि दर
जालौर	26.21
सिरोही	21.76
पाली	11.94
भीलवाड़ा	19.60
राजसमन्द	17.18
डूंगरपुर	25.36
बांसवाड़ा	19.71
चित्तौड़गढ़	-14.37
उदयपुर	16.52
दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र	*14.82*

स्त्रोत : *भारत की जनगणना, वर्ष 2001– 2011, शृंखला 21, राजस्थान,*

वर्ष 2001 से 2011 की जनगणना तक के समय में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में वृद्धि अंकित की गई है। इस अवधि में क्षेत्र में कृषि के विकास से सिंचाई क्षेत्र में वृद्धि हुई है। संरचनात्मक सुविधाओं का विकास और उसकी गहनता से वृद्धि के साथ द्वितीयक और तृतीयक सेवाओं में वृद्धि का प्रभाव जनसंख्या वृद्धि पर हुआ है।

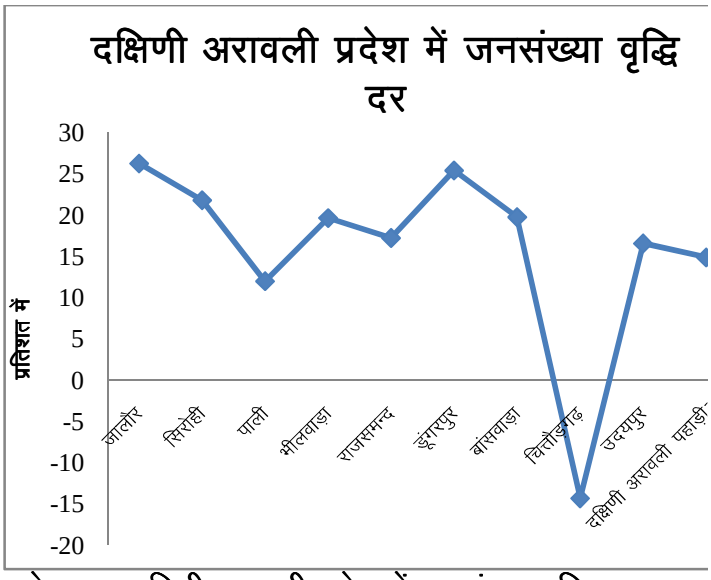

निवासियों की संख्या में हुए परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि द्वारा व्यक्त किया जाता है। जनसंख्या वृद्धि को कुल जनसंख्या वृद्धि तथा प्रतिशत दोनों के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। प्रतिशत मूल्य ज्ञात करने के लिये निरपेक्ष वृद्धि को विगत वर्ष की जनगणना से भाग देकर 100 से गुणा कर दिया जाता है तथा वास्तविक वृद्धि दर ज्ञात करने के लिये 10 का भाग देकर ज्ञात की जाती है।

दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर जालौर जिले में (26.21 प्रतिशत) रही है। दूसरी ओर सबसे कम चित्तौड़गढ़ जिले में (–14.37 प्रतिशत) रही है। अतः अध्ययन से यह स्पष्ट है कि यहां जनांकिकीय परिवर्तन के साथ–साथ आर्थिक एवं सामाजिक विकास भी बढ रहा है।

आरेख 4 : दक्षिणी अरावली प्रदेश में जनसंख्या वृद्धि दर

दक्षिणी अरावली प्रदेश की जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक निम्न है।

1. अध्ययन क्षेत्र की स्थिति एवं अवस्थिति का जनसंख्या वृद्धि में मुख्य योगदान है जो राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 पर स्थित है। अजमेर, कोटा व अहमदाबाद शहर के निकट स्थित होने के कारण यह शहर उत्तम यातायात से जुडा हुआ है।
2. अध्ययन क्षेत्र में विविध प्रकार की प्रशासनिक सुविधाऐं जैसे पुलिस मुख्यालय, चिकित्सा सेवायें, विद्यालय, महाविद्यालय एवं अन्य शिक्षण संस्थान, बैकिंग आदि सुविधाऐं जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने में सहायक है।
3. अध्ययन क्षेत्र में रोजगार के अच्छे अवसर होने के कारण ग्रामीण लोगो का आव्रजन होता है। पिछले दो दशको में शहर में आव्रजन जनसंख्या वृद्धि का महत्वपूर्ण कारक रहा है।
4. आधारभूत सुविधाओं की वृद्धि ने भी जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित किया है।

लिंगानुपात

किसी क्षेत्र की जनसंख्या में लिगांनुपात पुरूष एवं स्त्रियों के मध्य अनुपात का सूचक यह प्रति एक हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र का लिंगानुपात 960 हैं।

सारणी संख्या – 5 : दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में लिगांनुपात– वर्ष 2001 एवं वर्ष 2011

प्रदेश	लिगांनुपात वर्ष 2001	लिगांनुपात वर्ष 2011
जालौर	964	952
सिरोही	943	940
पाली	981	987
भीलवाड़ा	962	973
राजसमन्द	1000	990

डूंगरपुर	1022	994
बांसवाड़ा	974	980
चित्तौड़गढ़	964	972
उदयपुर	971	958
दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र	974	971

स्त्रोत : जनगणना विभाग, 2001 एवं 2011

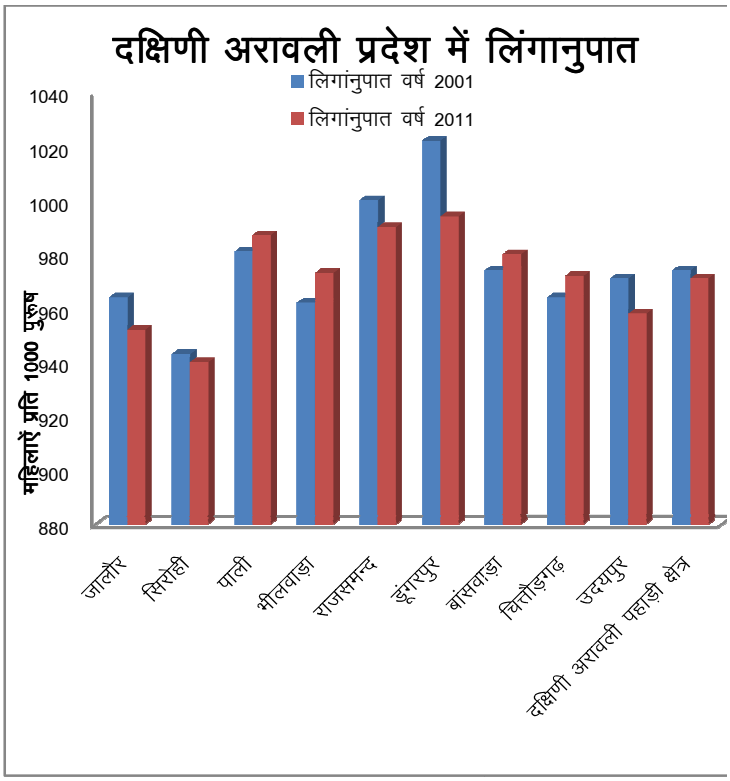

आरेख 5 : दक्षिणी अरावली प्रदेश में लिंगानुपात

अध्ययन क्षेत्र का वर्ष 2001 में लिंगानुपात 974 महिला प्रति 1000 पुरूष था, जो वर्ष 2011 में घटकर 971 ही रह गया। वर्ष 2001 में अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक लिंगानुपात डूंगरपुर जिले का (1022 महिला प्रति 1000 पुरूष) था तथा सबसे कम सिरोही जिले में (943 महिला प्रति 1000 पुरूष) रहा था। दूसरी ओर वर्ष 2011 में सबसे अधिक लिंगानुपात भी डूंगरपुर जिले का (994 महिला प्रति 1000 पुरूष) रहा है तथा सबसे कम भी सिरोही जिले में (940 महिला प्रति 1000 पुरूष) रहा है।

साक्षरता

साक्षरता किसी भी सभ्य समाज के विकास का मापदण्ड है। साक्षर व्यक्तियों को सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओ द्वारा संचालित विकास कार्यों की जानकारी अधिक होती है। समाज का यही वर्ग किसी भी कार्यक्रम के क्रियान्वयन मे अपनी सहभागिता निभाता है। साक्षर व्यक्ति मे किसी भी कार्यक्रम के सकारात्मक व नकारात्मक पहलूओ के मूंल्याकन करने की क्षमता अधिक होती है। साक्षरता जनसंख्या की गुणत्मक विशेषता है जो किसी क्षेत्र के सामाजिक व आर्थिक विकास का एक यथार्थ व विश्वसनीय सूचक है।

साक्षरता दर को प्रभावित करने वाले कारको में आर्थिक विकास का स्तर, नगरीकरण, जीवन स्तर, महिलाओं की सामाजिक स्थिति, विभिन्न शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता तथा सरकारी नीतयाँ प्रमुख है। दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में साक्षरता का अध्ययन यदि कृषि कार्य के संदर्भ में करे तो कृषि विकास एवं आधुनिकरण प्रक्रिया हेतु किसान का साक्षर होना आवश्यक हैं। वर्ष 2001 के आंकडो के आधार पर अध्ययन क्षेत्र का औसत साक्षरता स्तर 52.44 प्रतिशत था। जिसमे पुरूष साक्षरता 69.21 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 35.36 प्रतिशत था, वहीं वर्ष 2011 के आकडों के अनुसार कुल साक्षरता 59.93 प्रतिशत है। जिसमे पुरूष साक्षरता 74.04 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 45.56 प्रतिशत है। पिछले एक दशक में अध्ययन क्षेत्र में कुल साक्षरता में 7. 50 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि हुई है,जिसमें स्त्रियों की साक्षरता में सर्वाधिक 10.20 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

सारणी 6 : मध्य अरावली पहाड़ी क्षेत्र में कुल साक्षरता विवरण 2001–2011

प्रदेश	वर्ष 2001	वर्ष 2011	10 वर्षीय परिवर्तन
जालौर	46.49	54.86	8.37
सिरोही	53.94	55.25	1.31
पाली	54.39	62.39	8.00
भीलवाड़ा	50.74	61.37	10.63
राजसमन्द	55.65	63.14	7.49
डूंगरपुर	48.57	59.46	10.89
बांसवाड़ा	44.63	56.33	11.70
चित्तौड़गढ़	54.09	61.71	7.62
उदयपुर	58.62	61.82	3.21
दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र	52.44	59.93	7.50

स्त्रोत : जनगणना विभाग, 2001 एवं 2011

अध्ययन क्षेत्र मे पुरूष साक्षरता की तुलना में महिला साक्षरता कम है इसका प्रमुख कारण स्त्रियों का शिक्षा के प्रति जागरूक न होना है तथा इसके अलावा अध्ययन क्षेत्र मे जनसंख्या का ज्यादा भाग ग्रामीण होने के कारण पुरूष व स्त्रियाँ कृषि कार्यो में लगे हुए हैं एवं बच्चों को भी शीघ्र ही खेती के काम मे लगा लिया जाता है। वर्तमान समय में क्षेत्र में आज भी बच्चो को स्कूल न भेजकर घरेलू व कृषि कार्यो मे अधिकाधिक रूप से लगाया जाता है।

साथ ही क्षेत्र मे शैक्षिक सुविधाओं का भी अभाव है। परन्तु दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में सरकार ने साक्षरता को बढाने हेतु शिक्षा कार्यक्रम, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना आदि के माध्यम से प्रयासरत है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में सरकार विशेष आर्थिक भार उठाकर शिक्षा के प्रसार का प्रयास कर रही है। जिससे अध्ययन क्षेत्र मे शिक्षा का स्तर बढ रहा है। अध्ययन क्षेत्र मे विभिन्न वर्षो की साक्षरता दर को सारणी मे दर्शाया गया है।

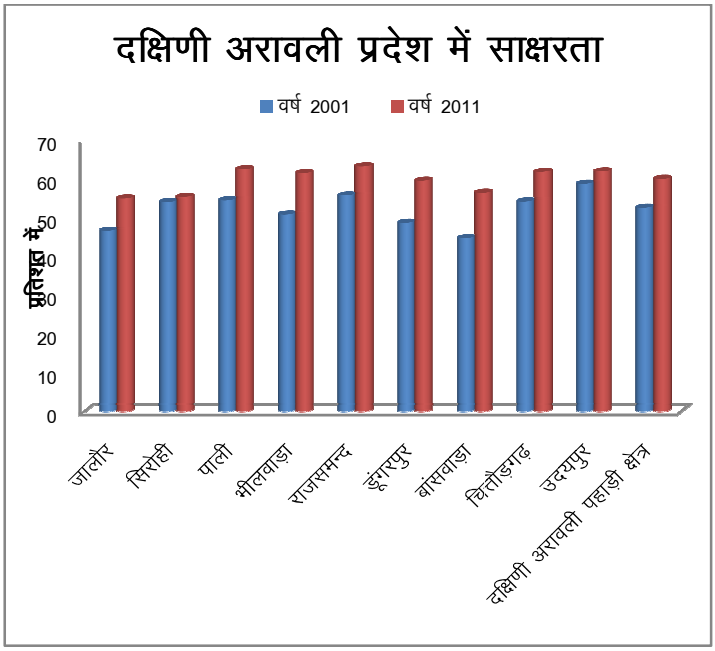

आरेख 6 : दक्षिणी अरावली प्रदेश में साक्षरता

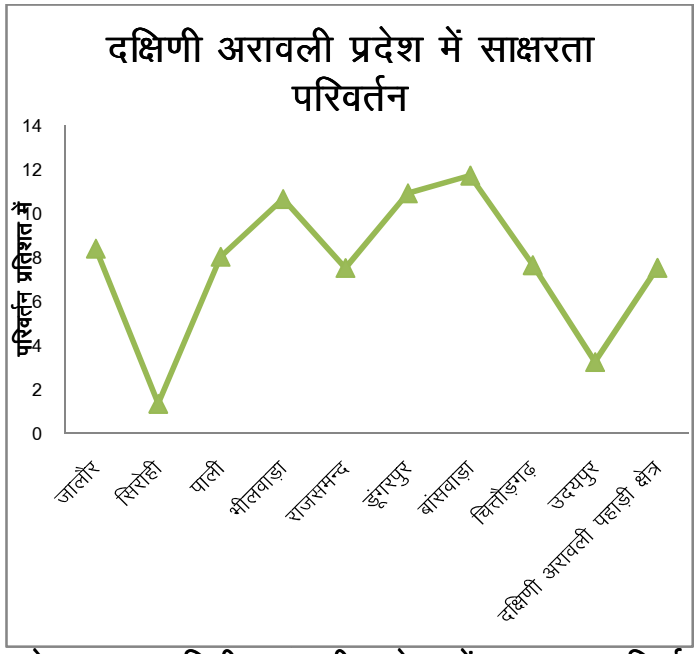

आरेख 7 : दक्षिणी अरावली प्रदेश में साक्षरता परिवर्तन

पुरूष साक्षरता का अवलोकन किया जाये तो स्पष्ट होता है कि पुरूष साक्षरता भी उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र में ही सर्वाधिक है जिसका मुख्य कारण यहाँ की शैक्षणिक सुविधाओं का उच्च विकास होना है। जबकि सबसे कम पूर्वी मैदानी क्षेत्र में है। स्त्री साक्षरता में उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र सबसे आगे व पूर्वी मैदानी क्षेत्र सबसे ज्यादा पिछड़ा हुआ है।

इस प्रकार पिछले दशकों से अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता के प्रतिशत में लगातार वृद्धि हो रही है। इसका कारण इस क्षेत्र में रोजगार की सम्भावना, सिंचाई सुविधा, आर्थिक सम्पन्नता एवं शिक्षण संस्थाओं की व्यवस्था आदि है।

अनुसूचित जाति संरचनाः

दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में वर्ष 2001 की जनगणनानुसार अनुसूचित जाति के व्यक्तियों की संख्या 1706130 थी जो कुल जनसंख्या का 12.08 प्रतिशत था। इस जनसंख्या में 874552 पुरूष तथा 831578 महिलायें शामिल थी। दूसरी ओर वर्ष 2011 में यह जनसंख्या बढ़कर 2084377 हो गई जिसमें 1065663 पुरूष तथा 1018714 महिलायें थी। वर्ष 2011 में अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या में 12.81 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जाति की है। दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में सर्वाधिक अनुसूचित जाति पाली जिले में वर्ष 2001 7में दर्ज की गई थी जबकि वर्ष 2011 में सर्वाधिक अनुसूचित जाति जनसंख्या भीलवाड़ा में है।

सारणी सं. 9 : दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्रः अनुसूचित जाति जनसंख्या संरचना (प्रतिशत में)

प्रदेश	*वर्ष 2001*			*वर्ष 2011*		
	कुल	*पुरूष*	*महिला*	*कुल*	*पुरूष*	*महिला*
जालौर	1.84	1.90	1.79	2.20	2.25	2.14
सिरोही	1.15	1.18	1.12	1.24	1.27	1.21
पाली	2.28	2.32	2.25	2.45	2.46	2.43
भीलवाड़ा	2.23	2.24	2.23	2.51	2.50	2.52
राजसमन्द	0.86	0.86	0.87	0.91	0.91	0.92
डूंगरपुर	0.32	0.32	0.33	0.32	0.32	0.32
बांसवाड़ा	0.45	0.45	0.45	0.49	0.49	0.49

चित्तौड़गढ़	1.77	1.78	1.76	1.54	1.54	1.54
उदयपुर	1.12	1.13	1.10	1.16	1.18	1.14
दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र	12.04	12.18	11.90	12.81	12.91	12.71

स्त्रोत : जनगणना विभाग, 2001 एवं 2011

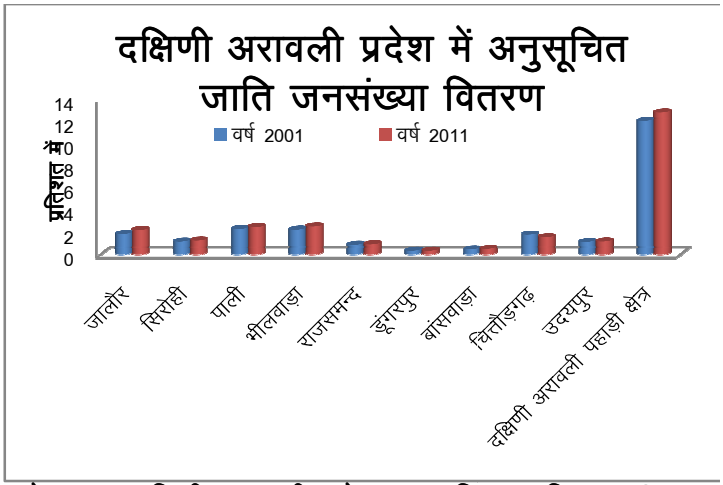

आरेख 8 : दक्षिणी अरावली प्रदेश अनुसूचित जाति जनसंख्या वितरण

वर्ष 2001 की जनगणनानुसार दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में सर्वाधिक अनुसूचित जाति पाली जिले (2.23 प्रतिशत) में दर्ज की गई थी, जबकि वर्ष 2011 के अनुसार सर्वाधिक भीलवाड़ा जिले (2.51 प्रतिशत) में अंकित की गई है। वर्ष 2001 में सबसे कम अनुसूचित जाति डूंगरपुर जिले (0.32 प्रतिशत) तथा वर्ष 2011 में सबसे कम भी इसी क्षेत्र में (0.32 प्रतिशत) रहा है।

अनुसूचित जनजातिः

दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में वर्ष 2001 के अनुसार अनुसूचित जनजाति की संख्या 4208632 थी जो कुल जनसंख्या का 29.71 प्रतिशत था। इस जनसंख्या में 2123583 पुरूष तथा 2085049 महिलायें शामिल थी। दूसरी ओर वर्ष 2011 में यह जनसंख्या बढ़कर 5089120 हो गई जिसमें 2572037 पुरूष तथा 2517083 महिलायें थी।

सारणी सं. : 8

मध्य अरावली पहाड़ी क्षेत्रः अनुसूचित जनजाति जनसंख्या संरचना (प्रतिशत में)

प्रदेश	वर्ष 2001			वर्ष 2011		
	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला
जालौर	0.90	0.93	0.86	1.10	1.13	1.07
सिरोही	1.49	1.50	1.47	1.80	1.81	1.79
पाली	0.75	0.77	0.73	0.89	0.90	0.88
भीलवाड़ा	1.27	1.30	1.25	1.41	1.42	1.40
राजसमन्द	0.91	0.91	0.91	0.99	0.98	0.99
डूंगरपुर	5.09	4.96	5.23	6.05	5.96	6.14
बांसवाड़ा	7.66	7.63	7.70	8.44	8.37	8.52
चित्तौड़गढ़	2.74	2.75	2.73	1.24	1.23	1.24
उदयपुर	8.90	8.85	8.95	9.38	9.37	9.38
दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र	29.71	29.59	29.83	31.29	31.17	31.41

स्त्रोत : जनगणना विभाग, 2001 एवं 2011

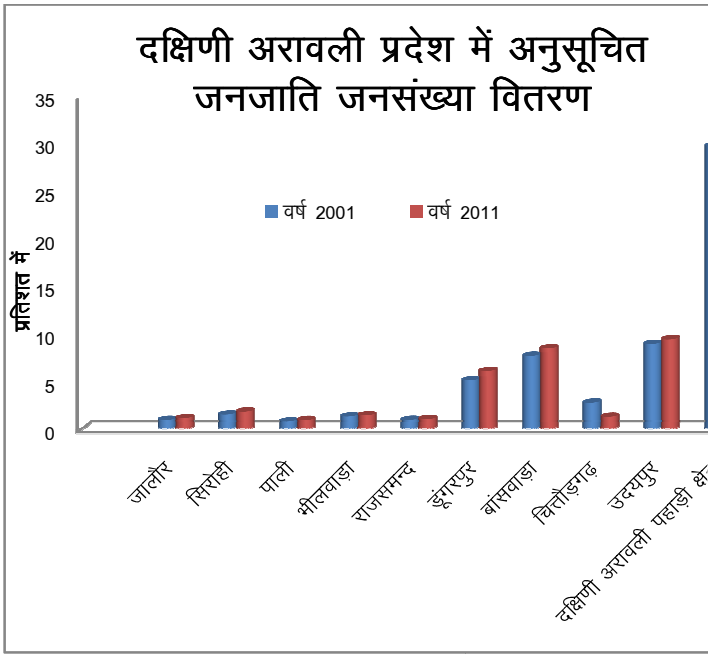

आरेख 9 : दक्षिणी अरावली प्रदेश अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वितरण

वर्ष 2011 में अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या में 29.71 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जाति की है। इस जनजाति में दशकीय परिवर्तन 1.70 प्रतिशत रहा है अर्थात् वर्ष 2001 की तुलना में वर्ष 2011 में इसमें 1.70 प्रतिशत जनसंख्या बढ़ोत्तरी हुई है।

दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति वर्ष 2001 में उदयपुर जिले में दर्ज की गई थी जबकि वर्ष 2011 में भी सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या इसी क्षेत्र में है।

वर्ष 2001 की जनगणनानुसार मध्य अरावली पहाड़ी क्षेत्र में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति उदयपुर जिले (8.90 प्रतिशत) में दर्ज की गई थी, जबकि वर्ष 2011 के अनुसार भी सर्वाधिक इसी पहाड़ी क्षेत्र (9.37 प्रतिशत) में अंकित की गई है। वर्ष 2001 में सबसे कम अनुसूचित जनजाति पाली जिले (0.75 प्रतिशत) तथा वर्ष 2011 में सबसे कम भी इसी क्षेत्र में (0.89 प्रतिशत) रहा है।

जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना :

व्यावसायिक दृष्टि से दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र की कार्यशील जनसंख्या को काश्तकार, खेतीहर मजदूर, पारिवारिक उद्योगों में संलग्न एवं अन्य कार्यों में संलग्न आदि चार वर्गों में वर्गीकृत किया गया है। जिसका विस्तृत विवरण सारणी में दिया गया है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार क्षेत्र में सर्वाधिक काश्तकारी वर्ग में व्यावसायिक लोगों का प्रतिशत 46.26 है, जो वर्ष 2011 में घटकर 28.17 प्रतिशत ही रह गया।

तत्पश्चात् खेतीहर मजदूरी में लगे हुए लोगों का प्रतिशत 6.37 था जो वर्ष 2011 में बढ़कर 10.72 प्रतिशत हो गया। पारिवारिक उद्योगों में लगे लोगों का प्रतिशत वर्ष 2001 में 3.75 था जो घटकर मात्र 3.12 प्रतिशत ही रह गया तथा अन्य कार्यों में लोगों का प्रतिशत 43.62 था, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 57.98 प्रतिशत हो गया।

सारणी 9 : दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र मेंजनसंख्या की व्यावसायिक संरचना – 2001–2011

कार्य	क्षेत्र	जनसंख्या 2001	प्रतिशत में	जनसंख्या 2011	प्रतिशत में
काश्तकार	पुरुष	108269	*29.50*	98259	*17.58*
	महिला	61520	*16.76*	59209	*10.59*
	योग	**169789**	***46.26***	**157468**	***28.17***
खेतीहर मजदूर	पुरुष	12865	*3.51*	31459	*5.63*
	महिला	10516	*2.87*	28463	*5.09*
	योग	**23381**	***6.37***	**59922**	***10.72***
पारिवारिक उद्योग	पुरुष	9083	*2.47*	11923	*2.13*
	महिला	4680	*1.28*	5525	*0.99*
	योग	**13763**	***3.75***	**17448**	***3.12***
अन्य कार्य करने वाले	पुरुष	138971	*37.86*	272734	*48.80*
	महिला	21115	*5.75*	51346	*9.19*

	योग	160086	*43.62*	324080	*57.98*
	कुल	367019	*100.00*	558918	*100.00*

स्रोत : जिला जनगणना प्रतिवेदन, 2001–2011

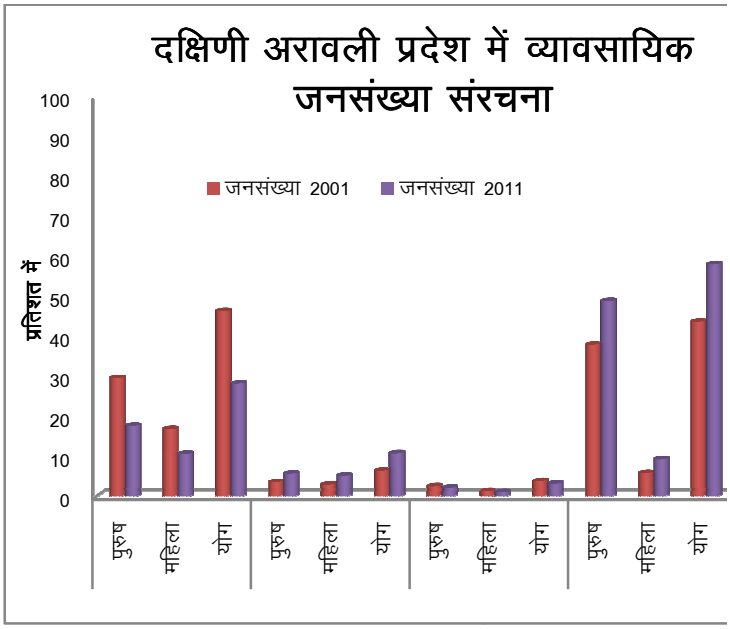

आरेख 10 : दक्षिणी अरावली प्रदेश व्यावसायिक जनसंख्या संरचना

जनसंख्या को आर्थिक गतिविधियों के आधार पर मुख्यतः तीन श्रेणियों में बांटा गया है जो इस प्रकार है –

कार्यशील : ऐसे व्यक्ति जो वर्ष के अधिकांश समय अर्थात् 183 दिन या इससे अधिक दिन कार्य करते हैं, उन्हें कार्यशील माना जाता है।

सीमांत : ऐसे व्यक्ति जो वर्ष के थोड़े समय के लिए कार्य करते हैं किन्तु अधिकांश समय कार्य में संलग्न नहीं रहते, उन्हें सीमांत कार्य करने वाला माना जाता है।

अकार्यशील : ऐसे व्यक्ति जिन्होंने आर्थिक गतिविधियों से सम्बंधित कार्यो में संलग्न नहीं होते हैं, उन्हें अकार्यशील माना जाता है।

क्षेत्र के समग्र विकास के लिए कार्यशील जनसंख्या की अधिकता को अनुकूल माना गया है। अध्ययन क्षेत्र में सन् 2001–2011 तक कुल जनसंख्या में कार्यशील, सीमांत व अकार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत आरेख में दर्शाया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या वर्ष 2001 में 40.39 प्रतिशत थी जो वर्ष 2011 में घटकर 29.71 प्रतिशत ही रह गई। जिसमें सर्वाधिक गिरावट महिलाओं में आई है। दूसरी ओर सीमान्त जनसंख्या में वर्ष 2001 की तुलना में वर्ष 2011 में 0.11 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गई है, जिसमें पुरूष जनसंख्या में सकारात्मक वृद्धि देखी गई है। अकार्यशील जनसंख्या में सर्वाधिक दशकीय परिवर्तन देखने को मिला है।

सारणी 10 : दक्षिणी अरावली पहाड़ी क्षेत्र : कार्यशील, सीमान्त व अकार्यशील जनसंख्या वितरण – 2001–2011

श्रेणी	वर्ग	वर्ष 2001	प्रतिशत में	वर्ष 2011	प्रतिशत में
कार्यशील	पुरुष	311535	*24.72*	414375	*22.02*
	महिला	197522	*15.67*	144543	*7.68*
	योग	509057	*40.39*	558918	*29.71*
सीमांत	पुरुष	42347	*3.36*	78337	*4.16*
	महिला	99691	*7.91*	135824	*7.22*
	योग	142038	*11.27*	214161	*11.38*
अकार्यशील	पुरुष	287361	*22.80*	467238	*24.83*
	महिला	321799	*25.53*	641161	*34.08*
	योग	609160	*48.34*	1108399	*58.91*
	कुल	1260255	*100.00*	1881478	*100.00*

स्रोत : जनगणना प्रतिवेदन, 2001–2011

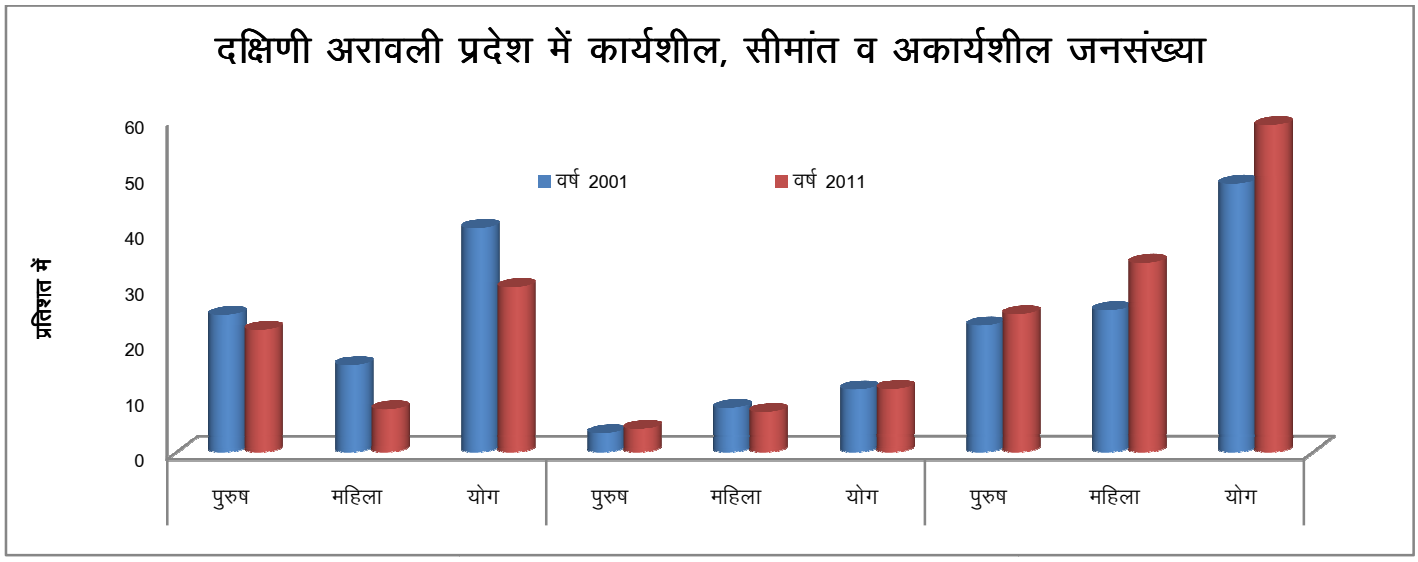

आरेख 11 : दक्षिणी अरावली प्रदेश में कार्यशील, सीमांत व अकार्यशील जनसंख्या

वर्ष 2001 में अध्ययन क्षेत्र में अकार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत 48.34 था जो बढ़कर वर्ष 2011 में 58.91 प्रतिशत हो गई। उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान में अध्ययन क्षेत्र में अकार्यशील जनसंख्या में प्रतिशत अधिक है। यदि किसी प्रदेश में कार्य करने वाले व्यक्तियों का प्रतिशत कुल जनसंख्या में अधिक है तो प्रदेश में मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति व विकास कार्यों में संतुलन बना रहेगा। इसके विपरीत यदि किसी प्रदेश में अकार्यशील जनसंख्या अधिक है तो विकास कार्यों की गति मंद होगी व मानवीय आवश्यकताओं के लिए संघर्ष बढ़ेगा। कार्यशील जनसंख्या के आधार पर किसी क्षेत्र की जनसंख्या में आश्रित व अनाश्रित जनसंख्या के अनुपात का आंकलन किया जाता है।

निष्कर्ष :

किसी क्षेत्र या देश का आर्थिक विकास जिस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों से प्रभावित होता है उससे कहीं अधिक योगदान क्षेत्र के आर्थिक विकास मे जनसंख्या का होता है प्राकृतिक संसाधन निष्क्रिय होते है लेकिन मानव ही प्राकृतिक संसाधनो का उपयोग करता है जनसंख्या, श्रम, पूर्ति, कार्य क्षमता, कार्यकुशलता, साक्षरता ,स्वास्थ्य आदि सभी तथ्य मानव शक्ति के रूप मे प्रभाव दिखाते है।

वर्ष 2001 से 2011 की जनगणना तक के समय में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में सकारात्मक वृद्धि अंकित की गई है। लिंगानुपात विगत वर्षों की तुलना में घटकर 971 स्त्रियाँ प्रति 1000 पुरूष हो गई है। आधारभूत सुविधाओं के उच्च विकास के कारण साक्षरता दर में परिवर्तन अध्ययन क्षेत्र में देखा गया है। विशेषकर महिलाओं की शिक्षा में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। वर्ष 2011 में मध्य अरावली पहाड़ी क्षेत्र की सकल साक्षरता 59.93 प्रतिशत दर्ज की गई है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि के विकास से सिंचाई क्षेत्र में, उत्पादकता, रोजगार आदि में भी वृद्धि हुई है। यहां भूमि उपयोग परिवर्तन पर जनसंख्या का दबाव अधिक रहा है जिससे यहां आर्थिक सामाजिक विकास भी बढ रहा है और भूमि उपयोग को विभिन्न विधियों के साथ समायोजित किया जा रहा है। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि क्षेत्र कृषि विकास व रोजगार सम्भावना के साथ–साथ मानव विकास सूचकांकों में वृद्धि होगी जिससे क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल होगा।

संदर्भ ग्रंथ :

1. जिला गजेटियर, दक्षिणी अरावली जिले।
2. जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, दक्षिणी अरावली जिले।
3. जनगणना रिपोर्ट, 2001, दक्षिणी अरावली जिले।
4. जनगणना रिपोर्ट, 2011, दक्षिणी अरावली जिले।
5. प्रो. शर्मा, एच.एस एवं डॉ.शर्मा, एम.एल. (2006) : राजस्थान का भूगोल पृ.155

6. डॉ. सक्सेना, हरिमोहन (2009): राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर पृ. 39–47
7. डॉ. भल्ला, एल.आर. (2003): राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिकेशन हाउस, जयपुर पृ. 65

[1] सेवानिवृत्त सह आचार्य, भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
[2] शोद्यार्थी, भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।